पाठ : 13 अभ्यास का परिणाम

शब्दार्थ : -

अष्टाध्यायी - आठ अध्याय वाला पाठ

कंठस्थ - ज़बानी याद करना

नीरे - पूरी तरह से , बिल्कुल

श्रेष्ठ - सबसे अच्छा

शरण - चरण

बछड़ा - गाय का बच्चा

क) बोपदेव गुरुकुल में पढ़ता था |

ख) गुरु जी ने बोपदेव को ' नीरा बैल ' इसलिए कहा क्यूँकि बोपदेव को न ही सूत्र याद रहते थे और न ही दीर्घ संधि के नियम |

ग) बोपदेव को कुछ भी याद इसलिए नहीं रहता था क्यूँकि वह पढ़ाई के बाद अभ्यास नहीं करता था | वह या तो पेड़ - पौधों के आसपास चक्कर लगाता रहता था या गौशाला में जाकर बछड़ों से खेलता रहता था |

घ) गुरू जी ने देखा की बोपदेव को कुछ भी याद नहीं रहता तो उन्होंने बोपदेव से कहा की तुम्हारे माँ-बाप क्या कहेंगे कि गुरु जी ने इसे कुछ भी नहीं सिखाया | निरा बैल का बैल ही रह गया | गुरु जी ने कहा की सारे छात्रों ने कितनी अच्छी तरह से पाठ सुनाया है और एक तुम हो की एक शब्द तक तुम्हे याद नहीं | तुम हमारे पास नहीं रह सकते | जब पढ़ना - लिखना ही नहीं है तो यहाँ रहकर क्या करोगे ' जाओ यहाँ से चले जाओ |

ड) वाल्मीकि रामायण में वर्षा ऋतु को वर्णित इस प्रकार किया गया है कि वर्षा ऋतु में आकाश काले बादलों से घिरे हैं | उनमे बिजली इस प्रकार कौंध रही है

, मानो रावण से हरी जाने वाली सीता छटपटा रही हो | आकाश में जब बादल अलग - अलग ः पोते है तो कहीं प्रकाश और कहीं अँधेरा दिखने लगता है | कहीं पर पर्वतों से सटे हुए मेघ ऐसी शोभा देते हैं , मानो वे शांत महासागर -से गंभीर हो |

च) बोपदेव जब गुरुकुल से अपने घर लौट रहा था तो रास्ते में पानी पीने के लिए के लिए एक कुएँ पर रुका | वहाँ पर दो महिलाएँ पानी भर रही थी उनसे बोपदेव ने पूछा की पानी से भरे घड़ो के नीचे वाले पत्थर में गड्ढें कैसे पड़ गए है | उनमे से एक महिला ने कहा कि इस चट्टान पर बार - बार घड़े रखे जाने से ये गड्ढ़े पद गए है | उसने बोपदेव को समझाया की जो काम बार-बार किया जाता है , उसका प्रभाव पड़े बिना नहीं रहता है | यही प्रेरणा लेकर बोपदेव वापस गुरुकुल लौट आया |

छ) बोपदेव ने गुरु जी से कहा कि , मैंने कुएँ पर घड़ों द्वारा पत्थर पर गड्ढे बने हुए देखे हैं | जब घड़े बार-बार रखने से कठोर पत्थर घिस सकते है तो निरंतर अभ्यास करने से मैं भी कठिन विषय अवश्य सीख सकूँगा | अब मुझे विद्वान् बनने की पूर्ण आशा हो गई है |

ज) बोपदेव को गुरूजी की ' वरदाचार्य ' नाम दिया | इसी बोपदेव ने वरदाचार्य नाम से 'लघुसिद्धांत कौमुदी ' नाम की व्याकरण की पुस्तक लिखी थी |

झ) पढ़ाई में सफलता वही पा सकते है जो बार बार प्रयास करते है | अभ्यास करते -करते जड़ बुद्धि वाला प्राणी भी ज्ञानी हो जाता है |